# जीवन की झांकियाँ

( प्रथम खण्ड )

## दिल्ली के वे स्मरणीय बीस दिन

इन्द्र विद्यावाचस्पति

प्रथमवार १०००

मूल्य आठ आने

जीवन की झांकियां ( प्रथम खण्ड )

# दिल्ली के वे संस्मरणीय बीस दिन

इन्द्र विद्यावाचस्पति

प्रकाशक—
विजय पुस्तक भण्डार
श्रद्धानन्द बाजार,
दिल्ली।

★

मुद्रक—
अर्जुन प्रिंटिंग प्रेस
श्रद्धानन्द बाजार,
दिल्ली।

# प्रस्तावना

साप्ताहिक वीर अर्जुन में 'मेरे जीवन की झांकियां' इस शीर्षक से जो लेखमाला प्रकाशित होती रही है, उसका यह पहला खंड पाठकों की सेवा में भेंट करते हुए मुझे प्रसन्नता होती है। प्रसन्नता का यह कारण नहीं कि भेंट बहुत कीमती है, प्रत्युत यह कारण है कि मैं गत तीन वर्षों के स्वास्थ्यसम्बन्धी जीवन–संग्राम में सफल होकर यह तुच्छ भेंट पाठकों के सामने रख रहा हूँ। इस लेखमाला में मैंने अपनी लगभग ५२ साल की स्मृतियों को शब्दों द्वारा चित्रित करने का यत्न किया है। इस सिलसिले में मैंने जो कुछ लिखा है उसे न इतिहास का नाम दिया जा सकता है और न आत्मचरित का। प्रत्येक लेख अपने आप में छोटे कैमरे से लिया हुआ स्नेपशोट है। एक ही व्यक्ति-द्वारा अपनी संसारयात्रा में लिये गये फुटकर चित्रों में जितनी एकता हो सकती है उतनी मेरी इन झांकियों में भी है। इससे अधिक एकता की पाठकों को आशा न रखनी चाहिये, और मुझे विश्वास है कि वह आवश्यकता भी नहीं समझेंगे। इतनी एकता काफी है कि वह चित्र एक ही व्यक्तिद्वारा एक ही कैमरे से लिये गये है।

इन संस्मरणों में मैंने अपने व्यक्तित्व को वहीं तक प्रगट होने दिया है जहां तक स्मृति के चित्रित करने के लिये आवश्यक है। इस दृष्टि से इनका नाम 'आपबीती' न रख कर 'जगबीती' रखना ही मैं उपयुक्त समझता हूँ।

सबसे पहले इस लेखमाला में से निकाल कर जो फूल पाठकों की सेवा में भेंट किये जा रहे हैं; वे समय की दृष्टि से पहले नहीं हैं। दिल्ली आज कल राजनीति की सबसे बड़ी रंगस्थली बनी हुई है। सत्ताईस वर्ष पूर्व वर्तमान भारत की राजनीति में दिल्ली का बहुत गौण स्थान था। कलकत्ता और बम्बई देश के प्रमुख शहर समझे जाते थे। अंग्रेज सरकार द्वारा भारत की राजधानी को यहां ले आने पर भी दिल्ली राजनैतिक दृष्टि से शून्य ही बना हुआ था। जिस घटना

चक्र ने उसकी ओर नवभारत की दृष्टि आकृष्ट की, इस पुस्तिका में उसके कुछ चित्र संगृहीत किये गये हैं। यही इस समय इरा पुस्तिका के प्रकाशित करने का महत्व है।

पाठक देखेंगे कि इस पुस्तिका में संगृहीत लेखमाला की पृष्ठभूमि में मेरे पूज्य पिता जी का व्यक्तित्व प्रायः स्थायी रूप से दृष्टि-गोचर होता है। यह स्वाभाविक है। जब तक वे जीवित रहे, मेरे जीवन की प्रत्येक घटना की पृष्ठभूमि में वे विद्यमान रहे। संस्मरणों के इन टुकड़ों में उस पृष्ठभूमि का अभाव कैसे संभव था।

मैंने यह पंक्तियां स्पष्टीकरण के लिये लिखी हैं, परिमार्जना के लिये नहीं। इस संपूर्ण लेखमाला के सम्बन्ध में मेरा वही निवेदन है जो मल्लिनाथ ने अपनी टीकाओं के सम्बन्ध में किया था। उसने लिखा था—

'नामूलं लिख्यते किंचित्, नानपेक्षितमुच्यते'

मैंने जो कुछ लिखा है वह मेरी जानकारी में सही है और अनावश्यक बात यथासम्भव नहीं लिखी गई।

इस संक्षिप्त प्रस्तावना के साथ मैं अपने जीवन की झांकियों के इस प्रथम खण्ड को पाठकों की सेवा में उपस्थित करता हूँ।

यहां मैं अपने मित्र पं० उदित मिश्र जी के प्रति कृतज्ञता प्रकाशित कर देना अत्यावश्यक समझता हूँ। यह लेखमाला उन्हीं की प्रेरणा का फल है। मैं एक दिन उन्हें अपने जीवन की घटनायें सुना रहा था। दो तीन घटनायें सुनकर वह बोले कि यदि आप इन संस्मरणों को लेखबद्ध कर दें तो बहुत अच्छा हो। उस दिन की बातचीत से मेरे मन में संस्मरणों को लेखबद्ध करने की भावना का जो बीजारोप हुआ, वर्तमान लेखमाला उसो का फल है। यदि पाठकों को इन लेखों के पढ़ने से कुछ भी संतोष हो तो उसका बहुत सा श्रेय मिश्र जी को प्राप्त होना चाहिये।

[ १ ]

# अवतरणिका

वह मेरे जीवन का सबसे पहला राजनीतिक अनुभव था। इसे मैं अपने सौभाग्य की बात समझता हूँ कि वह अनुभव मेरे अब तक के राजनीतिक जीवन का सब से प्रिय और गहरा अनुभव भी था।

लगभग दो वर्ष पूर्व, १९१७ ई० के अप्रैल मास में पिताजी मायापुर वाटिका में संन्यास ग्रहण कर रहे थे, और मैं गुरुकुल कांगड़ी में उपाध्याय की हैसियत से दर्शकों में बैठा हुआ उस कायापलट को देख रहा था। जिस घटनाचक्र का वृत्तान्त मैं अब सुनाने लगा हूँ, वह १९१९ ई० के मार्च मास के अन्त में प्रारम्भ होता है।

२९ मार्च १९१९ के सायंकाल दिल्ली में एक विराट सभा हुई। उसके सभापति स्वामीजी (पिताजी) थे। उपस्थिति लगभग १० हजार की थी, जो सत्याग्रह आन्दोलन के प्रारम्भकाल में बहुत बड़ी मानी जाती थी। सभा में जिन वक्ताओं के भाषण हुए, उन में मेरे अतिरिक्त मि० अब्बास हुसैन कारी, मौलाना अहमद सईद और ला० शंकरलाल के नाम उल्लेखयोग्य हैं। सभा का उद्देश्य दिल्ली निवा-

सियों को उस हड़ताल की सूचना देना था, जो ३० मार्च को रौलट एक्ट के विरुद्ध प्रतिवाद के रूप में होने वाली थी।

इस समाचार को भली प्रकार समझने के लिये बीच की कुछ घटनाओं का दिग्दर्शन उपयोगी होगा। स्वामीजी ने संन्यास लेने के साथ ही गुरुकुल छोड़ दिया, और दिल्ली आगये। दिल्ली के प्रसिद्ध दानवीर सेठ रग्घूमल लोहिया चिरकाल से स्वामीजी में श्रद्धा और आस्था रखते थे। नया बाजार (बर्न बैश्चन रोड, वर्तमान श्रद्धानन्द बाजार) पर उनके दो मकान थे। उन में से एक मकान की पहली सारी मंजिल सेठजी ने आश्रम के तौर पर उपयोग में लाने के लिये स्वामी जी को समर्पित करदी। स्वामीजी ने उस में अपना आश्रम बनाया था, और जीवन के शेष वर्षों में उसी में निवास किया। उसी मकान को श्रद्धानन्द बलिदान भवन के नाम से प्रसिद्ध होने का सौभाग्य मिला है। बीच के दो वर्षों में स्वामीजी ने दिल्ली में तथा उत्तरीय भारत के अन्य प्रदेशों में दलितोद्धार के आन्दोलन को जाग्रत और संगठित किया।

मैंने १९१८ के अन्तिम भाग में गुरुकुल से एक वर्ष की फर्लो प्राप्त करली थी, और नये बाजार के ही दूसरे भाग में एक मकान किराये पर लेकर 'विजय' नाम का दैनिक पत्र निकाला था। 'विजय' की कहानी इन झांकियों के किसी अन्य भाग में विस्तार से सुनाई जायगी, यहां पर तो वृत्तान्त के क्रम को बांधने के लिए केवल इतना बतला देना आवश्यक है कि मैं गुरुकुल से अवकाश लेकर दिल्ली आ गया था, और दैनिक 'विजय' का सम्पादन और संचालन करता था। 'विजय' दिल्ली और पंजाब का पहला हिन्दी दैनिक पत्र था। उसका दृष्टिकोण विशुद्ध राष्ट्रीय था।

१९१८ ई० में योरप का पहला महासंग्राम समाप्त हुआ। युद्ध के समय इंग्लैण्ड के शासकों ने हिन्दुस्तानियों को राजनीतिक अधि-

कारियों की ओर से स्वराज्य की बड़ीबड़ी आशायें दिलाई थीं। जब युद्ध समाप्त हो गया, और इङ्गलेण्ड की जीत हो गई तो भारतवासियों को स्वराज्य की पहली किश्त रौलट ऐक्ट के रूप में पेश की गई। उस समय की प्रचलित भाषा में आम की आशा दिला कर पत्थर भेंट किया गया। देश में इस विश्वासघात के कारण असन्तोष और रोष की घोर ज्वाला उत्पन्न हुई, जो निरन्तर बढ़ती गई। अन्त में महात्मा गांधी मैदान में आये, और देशवासियों के सामने अहिंसात्मक सत्याग्रह द्वारा रौलट ऐक्ट का विरोध करने का प्रस्ताव रखा।

स्वामीजी अब तक क्रियात्मक राजनीति से सर्वथा अलग रहे थे। उन्हें कोरी राजनीति में अणुमात्र भी श्रद्धा नहीं थी। उसे वह केवल 'प्रदर्शन, मानते थे। गांधीजी की तपस्यात्मक राजनीति के मैदान में आते ही स्वामीजी का हृदय उस ओर झुक गया। जब १९१९ के प्रारम्भ में महात्मा गांधी भारत के वायसराय से मिलने दिल्ली आये, तो स्वामीजी ने उन से भेंट की। उस भेंट का पूरा विवरण तो प्राप्त नहीं है। हां, उस भेंट के पश्चात् स्वामीजी ने मुझे यह बतलाया कि यदि महात्मा गांधी ने सत्याग्रह आरम्भ किया तो मैंने उन्हें आश्वासन दे दिया है कि मैं उनका साथ दूंगा। स्वामीजी दिल्ली की सत्याग्रही सेना के प्रथम सैनिक, और प्रकृतिसिद्ध गुणों के अनुसार प्रथम मार्गदर्शक बन गये। जब वायसराय की ओर से महात्मा गांधी को कोरा उत्तर मिला और उन्होंने सत्याग्रह आरम्भ करने की घोषणा करदी, तो दिल्ली में भी सत्याग्रह कमेटी स्थापित हो गई। स्वामीजी के पीछे पीछे ही मैं भी उस में सम्मिलित हो गया।

सत्याग्रह की लड़ाई का पहला कदम यह था कि देश भर में एक निश्चित दिवस 'प्रार्थना दिवस' के रूप में मनाया जाय, जिसमें आम हड़ताल हो, सब लोग दिन भर का उपवास करें, और ईश्वर से देश के कल्याण की प्रार्थना करें। इस कदम के उठाने में दिल्ली की

सत्याग्रह कमेटी सब से तेज़ रही। अभी महात्मा गांधी ने हड़ताल का दिन निश्चित नहीं किया था कि दिल्ली की सत्याग्रह कमेटी ने यह घोषणा करदी कि ३० मार्च को शहर में पूरी हड़ताल होगी, और उपवास रखा जायगा। जिस सभा के विवरण से यह परिच्छेद आरम्भ हुआ है, वह उसी दिवस का कार्यक्रम जनता को समझाने के लिये बुलाई गई थी।

उस सभा में कई विशेषतायें थीं, जिन्हे हम राजनीति में आने वाले युग के चिन्ह कहे तो अनुचित न होगा। स्वामीजी का अब तक का जीवन धर्म और शिक्षा के विस्तार में व्यतीत हुआ था, वह पहली वार इतनी बड़ी राजनीतिक सभा का सभापतित्व कर रहे थे। मौ० अहमद सईद का इससे पूर्व राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं था। वह मस्जिद में कुरान की शिक्षा देते थे, मजहबी जल्सो में वाज करते थे, और कभी कभी आर्यसमाजी पण्डितों से मुबाहिसे भी करते थे। उनका एक सयासी जल्से में आना समय का चिन्ह था। १९१४-१८ के युद्ध में टर्की का अंग्रेजों के विरुद्ध लड़कर परास्त होना, और फिर मित्रराष्ट्रो की जीत के कारण खिलाफत का नष्टप्राय होना अपना असर दिखा रहा था। मौलवी सम्प्रदाय की अंग्रेजविरोधिनी भावना प्रतिदिन वृद्धि पर थी।

कारी साहिब उन मुसलमान नौजवानो मे से थे, जो मजहबी दीवाने नहीं थे। उनके हृदयों में वस्तुतः देशभक्ति का भाव विद्यमान था। वह प्रसन्न थे, कि घटनाचक्र ने उनके मजहब को राजनीति के अनुकूल बना दिया है। उन्हें सन्तोष था कि वह कट्टर मुसलमान रहते हुए जनता के सामने देशभक्ति की बाते कह सकते थे।

मेरा बचपन से ही राजनीति की ओर झुकाव था। दिल्ली आकर मेरे उस झुकाव को पनपने और कार्यरूप में परिणत होने का अवसर मिला, मानो प्यासे को पानी मिल गया। पिताजी के राजनीति-

प्रवेश ने मुझे अवसर दिया कि मैं अपनी बचपन की हवस को पूरा करने के लिए गहरे पानी में लम्बी छलांग लगा दूं।

दिल्ली भारत की ५ हजार वर्ष पुरानी राजधानी है। अर्जुन ने "खाण्डववन" नाम के बीहड़ जंगल को जलाकर इन्द्रप्रस्थपुरी के लिये स्थान खाली किया था, और महाराज युधिष्ठिर की आज्ञा से चतुर शिल्पी मय ने इन्द्रप्रस्थ के दुर्ग का निर्माण किया था। तब से अब तक दिल्ली के सिर पर किसी न किसी रूप में भारत का ताज रहा है। इस बीच में यहां कई जातियें बवंडर की तरह आईं, और बवंडर की तरह चली गईं; सैकड़ों राजवंश विजेता बनकर सिंहासनारूढ़ हुए, और यहां की मिट्टी में अपनी हड्डियां छोड़ कर नामशेष रह गये। बहुत से शासकों ने इसे बनाया, बढ़ाया और सोलहों शृङ्गारों से सजाकर संसार की आंखों का केन्द्र बनाया, और अनेक लुटेरे विजेताओं ने इसे जी खोलकर लूटा, यहां के निवासियों का कत्लेआम किया, और अपनी समझ में इसे बिल्कुल खोखला करके घर को वापिस चले गये, परन्तु न जाने इस नगरी की मिट्टी में क्या विशेषता है कि नये शासकों ने फिर इसी को अपना महल बना कर मरघट बनाना उचित समझा। अस्तु। जिस समय का वृत्तांत मैं सुना रहा हूं, उस समय दिल्ली में अंग्रेजी सरकार अपना महल बना रही थी, जिस का बड़ा हिस्सा चुना जा चुका था।

यह पृष्ठ-भूमि थी, जिस पर उन स्मरणीय २० दिनों का चित्र रक्त के गहरे रङ्ग से अंकित हो रहा था।

[ २ ]

# रक्तपात

३० मार्च का दिन शुभ लक्षणों के साथ प्रारम्भ हुआ। प्रातःकाल उठते ही चारों ओर पूरी हड़ताल के दृश्य दिखाई दिये। सब बाजार एक दम बन्द थे। हजार में से नौ सौ नब्बे दूकाने खुली ही नहीं थीं। क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, क्या सिख और क्या जैनी सबने एक दम हड़ताल कर दी थी। चमारों और कसाइयों तक ने पंचायत करके काम बन्द कर दिया था। सदर के एक आनरेरी मजिस्ट्रेट खां साहब ने दूकान खोल तो दी और भाई बन्धुओं की कोई परवाह न की, लेकिन लोकमत का बल देखिये, थोड़ी देर में खां साहब भी तालियां, जेब में दबाए जाते नजर आये। आठ बजते बजते पता चल गया कि सारा शहर आज हड़ताल पर है। शेष १० फीसदी दुकानें दोपहर से पहले बन्द हो गई।

धीरे धीरे बाजार बन्द करके लोग सड़कों पर आने लगे। आकर देखा तो सवारियों से भरी ट्रामें चल रही थी। जनता ने ट्राम तांगा और इक्कों की सवारियों के आगे हाथ जोड़े और पैदल चलने को कहा परिणाम यह हुआ कि एक घन्टे भर में सारे शहर की ट्रामें बिलकुल

बन्द हो गई और तांगे तथा इक्के खाली घूमने लगे। नाई हजामत बना रहे थे, उनसे पूछने पर उत्तर मिला कि साहब, हम किसी से पैसा न लेंगे। हलवाइयों के पास बांध का दूध आया, वह सब उन्होंने बच्चों और गरीबों को मुफ्त बांट दिया। चांदनी चौक की घण्टाघर वाली प्रसिद्ध दुकान ने पांच मन दूध इसी प्रकार बांट दिया।

यह समाचार मैंने थोड़े से शाब्दिक परिवर्तन के साथ उस समय के दैनिक 'विजय' से उद्धृत किये हैं। इस अध्याय में स्थान स्थान पर मैं इसी प्रकार 'विजय' के उद्धरण दूंगा। उस समय 'विजय' का सम्पादक मैनेजर और रिपोर्टर मैं ही था। यह सब वृत्तान्त मेरा ही लिखा हुआ है। इस कारण इसे मैं अपनी स्मृतियों का बिलकुल ताजा टुकड़ा ही समझता हूँ।

नौ बजे तक शहर में बिलकुल शांत हड़ताल रही। उसके पश्चात् तरह तरह के विक्षोभजनक समाचार फैलने लगे। एक समाचार यह फैला कि हौज काजी के पास कुछ लड़कों ने एक मोटर को रोक कर सवारी को नीचे उतरने के लिये कहा, जैसे कि जनता सभी से कह रही थी। दैवयोग से मोटर में बैठे हुए साहब पुलिस के कप्तान थे। आपने लड़कों की इस हरकत को इतना बुरा समझा कि आव देखा ना ताव और सीटी बजा कर झट से पुलिस को बुला लिया। पुलिस ने आते ही डंडा बरसाना शुरु कर दिया। इस पर भीड़ बिखर गई, जिसके पश्चात् पुलिस ने दो आदमियों को गिरफ्तार करके कोतवाली में पहुंचा दिया।

इधर यह हो रहा था, उधर रेल के स्टेशन पर घटनाओं का चक्र और भी अधिक तेजी से चल रहा था। दो तीन स्वयंसेवक स्टेशन के दुकानदारों को दुकानें बन्द करने की प्रेरणा करने गये, दूकानदार दूकान बन्द करने को तैयार हो गये। इतने में ठेकेदार आ गया और उसने हड़ताल करने से इंकार कर दिया। इस समय स्टेशन पर काफी

भीड़ इकट्ठी हो चुकी थी। उसे देख कर रेलवे पुलिस का सुपरिन्टेन्डेण्ट वहां आकर लोगों को धमकाने लगा। इस पर दो एक आदमियों ने जबाब दे दिया। साहब ने सीटी देकर पुलिस इकट्ठी कर ली और दो आदमियों को गिरफ्तार करके स्टेशन की हवालात में बन्द करा दिया। यह समाचार शहर में बिजली की तरह फैल गया कि स्टेशन पर दो स्वयंसेवक पकड़े गये हैं। थोड़ी देर में स्टेशन के सामने चार पांच हजार आदमी इकट्ठे हो गये। लोगों ने पुलिस से कहा कि दोनों आदमी बेकसूर हैं, छोड़ दिये जांय। पुलिस ने उत्तर दिया कि दोनों छोड़ दिए गये। इस पर लोगों ने आग्रह किया कि छोड़ दिये गये हैं तो दिखा दो। इधर यह बातचीत हो रही थी, उधर किले से मशीनगनों के साथ गोरों का रिसाला आ पहुंचा। हथियार बन्द पुलिस वहां पहले से ही विद्यमान थी। डराने का यह सब सामान सामने खड़ा करके भीड़ को हट जाने का हुक्म दिया गया। लोग डरे नहीं, जम कर खड़े रहे और यह कहते रहे कि हमारे दोनों आदमी दे दो, हम चले जायंगे। कहते हैं, एक चौदह साल का ब्रह्मचारी कूद कर मशीन गन पर चढ़ गया और लोगों को निर्भयता का उपदेश देने लगा। पुलिस के आदमियों ने उसे पकड़ कर नीचे उतारा इस समय अकस्मात् सिपाहियों ने पहले भीड़ पर संगीनों का वार किया, फिर गोली चला दी।

संगीनों और गोलियों ने कितने लोगों को घायल किया इसके बारे में एक मत नहीं हो सका। दर्शकों की सम्मति थी कि सत्ताईस के लगभग आदमी घायल हुए, जिनमें से दो वहीं मर गये। लाशों और घायलों को घसीट कर सिपाही कंपनी बाग में ले गये। बागको भीड़ से खाली कराकर उसके सब दर्वाजे पुलिस ने बन्द कर दिये। इस कार्य ने शहर में घायलों की दशा और संख्या के सम्बन्ध में तरह तरह की अफवाहें फैलाने मे बहुत सहायता दी। मशहूर हो गया कि बाग में सैकड़ों लाशें इकट्ठी हो गई हैं। स्टेशन की ओर से हटाये जाकर लोग चांदनी चौक

में इकट्ठे हो गये और बाग के घंटाघर के सामनेवाले द्वार पर जमा होकर पुलिस से लाशों की मांग करने लगे। बाग के द्वार बन्द थे। बहिर भीड़ थी और अंदर पुलिस कहा सुनी में पुलिस के आदमियों को तैश आ गया पीछे से कहा गया कि लड़कों ने पुलिस के सिपाहियों पर पत्थर फेंके थे। सम्भव है किसी लड़के ने पत्थर फेंका भी हो। पुलिस ने दूसरी वार फिर गोली चला दी, जिससे कम से कम १० आदमी घायल हो गये। पुलिस यहा से भी घायलों को घसीट कर बाग में ले गई।

इस प्रकार, भारत के इस नवीन अभ्युत्थान का श्रीगणेश रक्तपात से हुआ। सरकार की गोलियों से भारतीय प्रजा का रक्त बहकर मिश्रित हो गया। उसमें हिन्दुओं का भी रक्त था, और मुसलमानों का भी। कुर्बानी के उस अनूठे मिश्रण ने नगर भर में जागृति जोश और एकता की एक ऐसी लहर पैदा करदी, जैसी इस सदियों बूढ़ी नगरी में इस से पूर्व शायद ही कभी दिखाई दी हो।

[ ३ ]

# शहर में सनसनी

दोपहर का समय था। मैं और डाक्टर सुखदेवजी स्वामी जी के पास बैठे उपवास के समय को बातचीत में टाल रहे थे। इतने में एक सज्जन हांपते हुए आये और समाचार दिया कि रेलवे स्टेशन पर गोली चल गई है, जिससे जनता में बड़ा जोश फैल रहा है। स्वामी जी इस खबर को सुनते ही उठ खड़े हुए और स्टेशन पर जाने के लिये उद्यत हो गये। समाचार इतना गम्भीर था कि उस पर कोई चर्चा भी न की जा सकी। स्वामीजी के पीछे-पीछे हम लोग भी स्टेशन की ओर चले। स्टेशन रोड पर कम्पनी बाग के दरवाजे के पास पहुंचे तो देखा कि गुर्खा फौज ने सड़क को रोका हुवा है। उस स्थान से कौड़िया पुल तक सड़क पर पुलिस का घेरा था। घेरे के अन्दर कई अधिकारी थे। मि० कर्री जो उन दिनों सिटी मजिस्ट्रेट थे, शहर कोतवाल खान बहादुर हमीदुद्दीन से बातें करते दिखाई दे रहे थे। पुलिस कप्तान मि० ओर्ड घोड़े पर चारों ओर दौरा लगा रहे थे। इस घेरे के चारों ओर भीड़ खड़ी हुई थी। सिपाही किसी को अन्दर नहीं जाने दे रहे थे। जब स्वामी जी घेरे के

पास पहुंचे, तो पहले सिपाहियों ने उन्हें रोका। परन्तु यह कहने पर कि मैं मजिस्ट्रेट से बात करना चाहाता हूँ रास्ता दे दिया। सिपाही स्वामीजी के रोब में आगये या उन्हें आज्ञा ही ऐसी थी कि यदि कोई मजिस्ट्रेट से मिलना चाहे तो उसे घेरे में जाने दें यह निश्चय से नहीं कहा जा सकता स्वामीजी इस आसानी से अन्दर जले गये, उसे देखकर लोगों को आश्चर्य अवश्य ही हुआ।

स्वामीजी पुलिस के घेरे के अन्दर जाकर कोई दस मिनट में वापिस आगये। आकर उन्होंने बतलाया कि अधिकारी अपनी जिद पर अड़े हुए है। "मैंने उनसे कहा था कि लोगों के एक डेपुटेशन को बाग में ले जाकर घायलों और लाशों को देखने का अवसर दे दो, तो जनता शांत हो जावेगी, परन्तु अधिकारियों ने इस सुझाव को पसन्द नहीं किया।"

उस समय फतहपुरी और चांदनी चौक में लाखों की भीड़ इकट्ठी हो रही थी। शहर में सब करोबार बंद था। तरह तरह की अफवाहों से प्रभावित होकर लोग एक नये स्फूर्ति से भरे हुए जीवन का अनुभव कर रहे थे। घरों में चुप चाप बैठना उनके लिये असम्भव हो गया था। वह बाहर आ गये थे और चाहते थे कि कुछ करें। क्या करें यह उन्हें मालूम नहीं था। वह समय शहर के लिये बहुत संकटपूर्ण और पेचीदा था। एक ओर भड़की हुई जनता थी और दूसरी ओर घबराये हुये अधिकारी। परिस्थिति दोनों ओर ही नई थी। उस समय दोपहर के दो बजे होंगे। आधा दिन सामने पड़ा था। पहले दिन यह घोषणा की जा चुकी थी कि सांयकाल चार बजे पीपल पार्क में सार्वजनिक सभा होगी, परन्तु अभी उस में भी तो दो घन्टे शेष थे। इन दो घन्टों में बहुत भारी अनर्थ हो सकता था। लोग भूलें कर सकते थे और सिपाही उन्हें गोलियों से भून सकते थे। ऐसे समय में शहर को ठीक नेतृत्व की आवश्यकता थी। जब स्वामी जी स्टेशन

की ओर से लौट कर आये और निराशाजनक उत्तर दिया तो किंकर्तव्य विमूढ़ जनता उनके मुंह की ओर देखने लगी। मानो आदेश की प्रतीक्षा कर रही हो। जनता के स्वभावसिद्ध नेता की भांति स्वामीजी ने तत्काल घोषणा की 'सब लोग चलो पीपल-पार्क को। वहां अभी आम जल्सा किया जायगा। सारे शहर में ऐलान करदो कि कोई आदमी बाजार में न रहे, सब लोग पीपल-पार्क में पहुंचे।'

लोगों को किसी कार्य के आदेश की आवश्यकता थी, वह पूरी हो गई। चारों ओर इस एलान के साथ लोग फैल गये कि अभी आधे घन्टे में पीपल-पार्क में जल्सा होगा। वहां सब दिल्लीनिवासियों को एकत्रित होना चाहिये।

[ ४ ]

# सभा

जो सभा पीपल पार्क में चार बजे से शुरू होने वाली थी, वह अढ़ाई बजे ही आरम्भ कर देनी पड़ी। पीपल पार्क के शेष भाग में अभी धूप थी, इस कारण पत्थरवाले कुंए के पास बनारसी कृष्णा मैन्शन की छाया में लोग बैठ गये और वहीं सभा आरम्भ हुई। कुछ कविताएं पढ़ी गईं, जिनके पश्चात् स्वामीजी जनता को शान्ति का उपदेश देने के लिए खड़े हुए। उसी समय गोली चलने की आवाज सुनाई दी; और थोड़ी देर बाद घबराये हुए लोग भाग कर आये। उनसे मालूम हुआ कि पुलिस ने घण्टाघर पर एकत्रित हुई जनता पर गोली चला दी है जिससे बहुत से व्यक्ति घायल हो गये हैं। इस समाचार से लोगों में हलचल सी मच गई और वे हिलने लगे। उन्हें समझा बुझाकर शान्त किया जा रहा था कि इतने में उत्तर दिशा से घुड़सवार सशस्त्र सेना का एक दस्ता, सभा की ओर बढ़ता दिखाई दिया। सन् ५७ की क्रांति के बाद शायद यह पहला अवसर था, कि दिल्ली के निवासियों पर सेना चढ़ाई करती हुई दिखाई दी। जनता ने जिस धैर्य से

उस दृश्य का सामना किया, वह प्रशंसनीय था। लोग अपनी जगह पर बैठे प्रतीक्षा करने लगे कि आगे क्या होगा ? सेना की टुकड़ी सभा के पास आकर रुक गई। उनके अफसर ने आगे बढ़कर पूछा-- यहां क्या हो रहा है ? स्वामीजी उस समय व्याख्यान दे रहे थे। उन्होंने अफसर को अंग्रेजी में समझाया कि "यह सभा हो रही है और मैं लोगों को शान्त रहने का उपदेश दे रहा हूँ।" इस उत्तर से वह अफसर किंकर्तव्य-विमूढ़ सा हो गया और कुछ देर तक चुप रह कर बोला—'अच्छा, तो आप लोग अमन से जल्सा करते रहिए, हम जाते हैं।' यह कह कर वह सिपाहियों को लेकर चला गया। सभा जारी रही।

लगभग साढ़े चार बजे मैदान में छाया काफी फैल गई थी। तब मंच बनाकर खुली जगह में सभा जारी रखी गई। अभी पांच ही बजे होंगे कि फौज ने दूसरी बार सभा का घेरा डाल दिया। इस बार सभा को लगभग चारों ओर से घेर लिया गया। एक ओर घुड़सवार सेना थी। किले की तरफ सड़क पर कई मशीनगनें खड़ी थीं और दो ओर से पुलिस ने नाकाबन्दी की हुई थी। पुलिस के आगे आगे दिल्ली प्रान्त के चीफ कमिश्नर मि० बेरन, डिप्टी कमिश्नर मि० बीडन, सिटी मजिस्ट्रेट, कोतवाल आदि अधिकारियों की कतार लगी हुई थी। यद्यपि परिस्थिति काफी भयंकर थी, तो भी जनता हिली नहीं, अपनी जगह जमी रही। उस समय स्वामीजी मंच पर खड़े होकर जनता को शान्त रहने का उपदेश दे रहे थे। चीफ कमिश्नर ने हाथ के इशारे से स्वामीजी को अपने पास आने को कहा। पहले तो स्वामीजी ने चीफ कमिश्नर को उत्तर दिया कि "मैं यहीं से सुन लूंगा और आपको जवाब दे दूंगा। आपका जो कुछ कहना है वहीं से कह दीजिए।" परन्तु जब चीफ कमिश्नर ने दो तीन बार स्वामीजी को पास आने को कहा तब वह बाहर चले गये और चीफ कमिश्नर से बातें करने लगे। स्वामीजी ने चीफ कमिश्नर को बतलाया कि 'हम पुर-अमन सभा कर रहे हैं।

मैं लोगों को शान्त रहने का उपदेश दे रहा हूँ। इसपर चीफ कमिश्नर ने स्वामीजी से पूछा कि आप लोग इन्हें भड़कायगे तो नहीं ? स्वामी जी ने उत्तर दिया — हम सत्याग्रही हैं, हम लोगों को शान्ति का उपदेश दे रहे हैं। आपको ऐसा सन्देह भी न करना चाहिए कि हम इन्हें भड़कायेंगे। चीफ कमीश्नर ने बातचीत के अन्त में स्वामीजी से कहा— मैं आपकी जिम्मेवारी पर इस सभा को जारी रहने देता हूँ। स्वामी जी ने उत्तर दिया—मैं जिम्मेवारी लेने को तैयार हूँ, यदि पुलिस या सेना व्यर्थ में दखल देकर लोगों को न भड़काये। चीफ कमिश्नर यह कह कर दल-बल सहित सभा से चले गये कि जलसा शान्ति से करलो; जलसे के बाद घरों को जाते हुए लोग कोई गड़बड़ न करेंगे तो पुलिस और मिलिटर किसी तरह की दस्तअन्दाजी नहीं करेंगे।

सभा के किले का दूसरा घेरा उठ जाने के बाद कार्यवाही फिर जारी हो गई। मि० श्वैब कुरैशी एम० ए० ने जो शायद अब भूपाल रियासत में एक ऊंचे अधिकारी हैं, एक शानदार व्याख्यान दिया, जिसका अन्तिम भाग यह था—'ये हैवानी ताकतें हैं, आप इनसे न डरें। खुदा आपके साथ है। जालिम जुल्म करें और आप सदाकत पर जमे रहें।'

इस सभा में पं० लक्ष्मीनारायणजी का भी भाषण हुआ। पंडितजी कट्टर सनातन-धर्मी थे और बहुत ही पुराने विचारों के प्रचारक समझे जाते थे। उन्हें राजनीतिक सभा में बोलते देखकर बहुत आश्चर्य हुआ। मौलाना अहमद सईद और पण्डित लक्ष्मीनारायण जैसे कट्टर मजहबी आदमियों का राजनीति के मंच पर आ जाना भी उस जागृति का एक चमत्कार था।

[ ५ ]

# संगीनों की नोक पर

जब उस दिन की सभा समाप्त हुई, तब आकाश में सन्ध्या का अंधेरा छा चुका था। शान्ति का उपदेश चार पांच घण्टे तक सुनकर जनता अशान्ति के प्रभाव से निकल चुकी थी। दिन की घटनाओं से जो विक्षोभ उत्पन्न हुआ था, वह सत्याग्रह के सन्देश से बहुत कुछ शान्त हो चुका था। सभा-स्थान से आगे आगे स्वामी जी चले और उनके पीछे 'भारत माता की जय' 'हिन्दू मुसलमान की जय' आदि नारे लगाती हुई जनता चली। वह लगभग बीस पच्चीस हजार की भीड़ एक क्रम में बंध कर फव्वारे से होती हुई घण्टाघर की ओर जा रही थी और उनके पीछे-पीछे कई मशीनगनें और बहुत से घुड़सवार सिपाही, मानो पहरा देते जा रहे थे। मैं भी उस भीड़ की अगली श्रेणी में, स्वामीजी की दाईं ओर चल रहा था। इससे जो घटना घण्टाघर पर हुई — वह मैंने पूरी तरह आंखों से देखी। बहुत से चित्रकारों और कवियों ने उस घटना के प्रतिभा-सम्पन्न चित्र खींचे हैं। मैं उसका यथासम्भव यथार्थ वर्णन लिखता हूँ।

सारी घटना लगभग पांच मिनट में समाप्त हो गई। जब जन-समुदाय घण्टाघर तक पहुंच गया, तब देखा कि उससे आगे कम्पनी बाग की ओर गुरखा सिपाही लाइन बांधे खड़े हैं। लोग नारे लगाने में मस्त थे और तेजी से आगे बढ़ते जा रहे थे। सिपाही भीड़ को अपनी ओर आता देखकर कुछ घबरा गये और तीन चार कदम पीछे हटकर अपनी बन्दूकों को ऐसे ढंग से सम्हालने लगे, जैसे गोली छोड़ने के समय सम्हालते हैं। उस समय उनका अफसर वहां नहीं था। इस कारण वे किंकर्तव्य-विमूढ़ से हो रहे थे कि इतने में एक बन्दूक चल गई। सरकार का बयान था — वह Misfire था, अर्थात् गोली भूल से चल गई थी। यह सर्वथा सम्भव है कि गोली भूल से चल गई हो। लोग गोली की आवाज से विक्षुब्ध हो गये। स्वामीजी ने लोगों को वहीं ठहरने और शान्त रहने का आदेश दिया और स्वयं आगे बढ़कर सिपाहियों की श्रेणी के ठीक सामने जाकर खड़े हो गये। सिपाही आश्चर्यित थे कि अब क्या होगा ?

स्वामीजी ने सिपाहियों से पूछा—'तुमने गोली क्यों चलाई ?'

इस प्रश्न का कोई उत्तर न देकर कई सिपाहियों ने अपनी बन्दूकों की संगीनें स्वामीजी की तरफ को बढ़ाते हुए कहा — 'हट जाओ, नहीं तो हम छेद देंगे।' स्वामीजी एक कदम और आगे बढ़ गये। अब संगीन की नोक स्वामीजी के कपड़े को छू रही थी। स्वामीजी ने बड़े ऊंचे स्वर से कहा—'मार दो !' और वहीं खड़े रहे।

यह दृश्य शायद एक मिनट भर रहा होगा। इतने में एक अंग्रेज अफसर घोड़ा भगाये हुए वहां आया। उसके आने पर सिपाहियों ने बन्दूकें नीची करलीं। स्वामीजी ने अफसर से पूछा—'गोली क्यों चलाई गई ?'

अफसर ने बहुत अस्पष्ट शब्दों में उत्तर दिया—'It was only misfire'—गोली भूल से चल गई थी! साथ ही, उसने

सिपाहियों को पीछे हटकर, भीड़ के लिये रास्ता छोड़ने का हुक्म दे दिया। सिपाही पीछे हट गये। जनता ने फिर अपना कोलाहलपूर्ण प्रयाण जारी रखा। यह जुलूस नये बाजार में श्रद्धानन्द-बलिदान-भवन की इमारत तक गया। स्वामीजी सीढ़ियों पर चढ़ गये और लोग अपने अपने घरों को चले गये।

[ ६ ]

# मस्जिद के मिम्बर पर

यह कहने में जरा सी भी अत्युक्ति नहीं है कि ३० मार्च की घटनाओं ने केवल दिल्ली निवासियों में ही नहीं, प्रत्युत भारत के बहुत बड़े भाग में मानसिक क्रान्ति पैदा करदी। उस दिन सायंकाल के समय जो भावना जनता में पैदा हो गई थी, उसे देखते हुए हम कह सकते हैं कि उस दिन के बाद बारह घंटों में जो परिवर्तन आया, सामान्य रूप से वह बारह वर्षों में भी न आता। कहावत है—लहू पानी की अपेक्षा गाढ़ा होता है। यह उस दिन देखने में आया। पुलिस और फौज की गोलियों ने जिन लोगों को घायल अथवा शहीद किया, उनमें हिन्दू भी थे और मुसलमान भी। दोनों का लहू बहकर मिल गया। इस रक्त मिश्रण ने चमत्कार कर दिखाया। ३१ मार्च के प्रातःकाल मानों हिन्दू मुसलमानों का भेद मिट चुका था। 'हम' शब्द के 'ह' से 'हिन्दू' और 'म' से मुसलमान का ग्रहण करके एकता के बन्धन की घोषणा करने का रिवाज उसी समय से चला है। ३१ मार्च के प्रातःकाल ३० मार्च को गोली से आहत हुए एक मुसलमान का जनाजा निकला।

दिल्ली-निवासियों को अपने हृदय में भरे हुए रोष और जोश को प्रकाशित करने का अच्छा अवसर मिला। जनाजा जब घंटाघर के पास पहुँचा, तब लगभग उसके साथ २ लाख की भीड़ थी। भीड़ में हिन्दू अधिक थे या मुसलमान, यह कहना कठिन है। जनाजे के साथ स्वामी श्रद्धानन्दजी भी थे और हकीम अजमलखां भी। दिल्ली की इन दोनों विभूतियों का प्रथम साक्षात्कार जनाजे के जुलूस में ही हुआ।

अगले दिन सिविल हस्पताल से पांच शहीदों की लाशें मिलीं। उनमें दो मुसलमान थे और तीन हिन्दू। कुछ दूर तक पांचों अर्थियां साथ साथ चलीं। उस समय अनुमान लगाया गया था कि उनके साथ कम से कम तीन लाख हिन्दू मुसलमानों की भीड़ थी चांदनी चौक से भीड़ दो हिस्सों में बंट गई। मुसलमानों का जनाजा ईदगाह की ओर चला गया और हिन्दुओं की अर्थियां यमुना जी की ओर। ईदगाह और निगमबोध घाट पर बेतहाशा भीड़ थी। दोनों जगह देशभक्ति और एकता पर व्याख्यान हो रहे थे।

इस जोश की चरम सीमा उस समय प्रकट हुई, जब ४ अप्रेल के दिन, दोपहर बाद की नमाज के पीछे जामा मस्जिद में मुसलमानों का एक विशाल जलसा हो रहा था, और उसमें मौलाना अब्दुल्ला चूड़ीवाले ने आवाज देकर कहा 'स्वामी श्रद्धानन्दजी की तकरीर भी होनी चाहिये।' नारए तकबीर से मस्जिद गूंज उठी। दो-तीन जोशीले नौजवान उठे और तांगे पर जाकर नये बाजार से स्वामीजी को लिवा लाये। 'अल्ला-हो-अकबर' के नारों के साथ स्वामीजी मस्जिद की वेदी पर आरूढ़ हुए। शायद यह भारत के ही नहीं, इस्लाम के इतिहास में पहला अवसर था कि एक मुसलमानेतर व्यक्ति ने जुम्मा मस्जिद की वेदी पर से वाज किया। स्वामीजी ने ऋग्वेद के एक मंत्र से अपना व्याख्यान आरम्भ किया, और 'ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः' के साथ समाप्त किया। ६ अप्रैल को फतहपुरी मस्जिद में भी स्वामीजी का भाषण हुआ।

## (क) नगर पर स्वयंसेवकों का पहरा

१६ अप्रैल के सायंकाल शहर में यह समाचार पहुंच गया कि सत्याग्रह-कमेटी ने हड़ताल समाप्त करा देने का निश्चय कर लिया है। इस समाचार के फैलने के कुछ समय पश्चात् ही सत्याग्रह-कमेटी के कार्यालय में सूचना पहुंची कि शहर में से पहरा पुलिस सर्वथा उठाली गई है और पुलिस के सब सिपाही चौकियों में एकत्र कर दिये गये हैं।

सायंकाल का समय था। रात आ रही थी। सत्याग्रह कमेटी ने परिस्थिति पर विचार करके निश्चय किया कि रात्रि के समय शहर में पहरा देने का कार्य कमेटी अपने हाथ में ले। ऐसा न हो कि पुलिस के असहयोग के कारण नागरिकों को हानि उठानी पड़े। कमेटी की ओर से स्वयंसेवकों को सूचना भेजकर कार्यालय में एकत्र किया गया। यह पूछने पर कि रात में पहरा देने की सख्त ड्यूटी देने के लिए कौन कौन तैयार हैं, सभी स्वयंसेवकों ने स्वीकृति प्रकट की।

उस समय ऐसा अनुभव होने लगा, जैसे शहर पर सत्याग्रह कमेटी का ही कब्जा होने वाला है। कार्यकर्ताओं के लिए वह अपने ढङ्ग का नया अनुभव था। सरकार की गति-विधि को अभी हम लोग पूरी तरह नहीं समझते थे। कमेटी के अधिकारी यह मान कर स्वयं-सेवकों को ड्यूटियां बांटने लगे मानो हमेशा उन्हीं को शहर की रक्षा का प्रबन्ध करना है।

वह दृश्य मुझे अब तक अच्छी तरह याद है। दिल्ली के पुराने राष्ट्रसेवी ला० शंकरलालजी पुलिस कप्तान की सी जिम्मेवारी का बोझ उठाये कार्य का निरीक्षण कर रहे थे। मौलाना अब्दुल्ला उस समय राष्ट्रीय कार्य में नये ही आये थे, परन्तु उनमें व्यक्तित्व का बल इतना था कि वह नेताओं से भी अगली पंक्ति में बैठे दिखाई देते थे। मौलाना

बहुत पढ़े-लिखे नहीं थे और न लेखक या वक्ता ही थे। उनके अन्दर संगठन करने की अद्भुत शक्ति थी और किसी नई परिस्थिति का सामना करने योग्य तीव्र सूझ थी। वाणी में बहुत खुरदरे और क्रिया में काफी साहसी थे। उन दिनों स्वयंसेवकों में लोग उन्हें लेनिन के नाम से पुकारते थे। राष्ट्रीय शहर कोतवाल का ओहदा उन्हें खूब सजता था। जब वह जोश में बोलते थे तब उनके चेहरे और आंखों से अपराधी स्वयं ही डर जाते थे। मौलाना अब भी विद्यमान हैं, परन्तु राजनीति के क्षेत्र से लगभग अलग हो चुके हैं।

ड्यूटियां बांट दी गईं, जिनके अनुसार स्वयंसेवक सारे शहर में फैल गये। स्वयंसेवकों के कप्तान थे, हकसर साहब। जिन्होंने जवानी में हकसर साहब को देखा होगा वही उनकी शान को समझ सकते हैं। नाम से स्पष्ट है कि वह काश्मीरी थे। उन्हें काश्मीर का पूरा रूप मिला था। ऊंचा कद, गोरा रंग, सुन्दर डील-डौल, फ्रेंचकट की नुकीली दाढ़ी और ऊंची आवाज—यह सभी गुण हकसर साहब को सेनापति बनने में सहायता देते थे। उनकी एक बड़ी विशेषता यह थी कि बच्चों से भी अधिक सरल थे। जल्दी रूठते और उससे भी जल्दी मानते थे। सारांश यह है कि उन्हें देखने और प्यार करने को जी चाहता था। कई वर्ष हुए वह अपने वतन काश्मीर चले गये थे, अब मालूम नहीं वह कहां हैं। वह उस समय दिल्ली के स्वयंसेवकों के मुखिया थे।

रात भर स्वयंसेवकों ने शहर का पहरा दिया। मेरे और श्री अब्बासहुसैन कारी के सुपुर्द शहर के निरीक्षण की जनरल ड्यूटी थी। शहर भर में कई चक्कर लगा कर हम लोगों ने सत्याग्रह कमेटी में जो रिपोर्ट दी, वह यह थी कि स्वयंसेवकों ने अथक परिश्रम से कार्य किया, जिसका फल यह हुआ कि रात भर में शहर में किसी प्रकार की कोई भी वारदात नहीं हुई।

## (ख) पाशविक बल का प्रदर्शन

१७ अप्रैल के प्रातःकाल सात बजे से ही शहर में एक नयी सनसनी-सी थी। रात भर गुम रहकर पुलिस संगठित और उग्ररूप में नगर के भिन्न-भिन्न मोर्चों पर प्रकट हुई। घण्टाघर, फतेहपुरी, हौज-काजी, लाहोरी दरवाजा आदि केन्द्रों पर अफसरों और बन्दूक तथा लाठियों से लैस सिपाहियों का जमाव किया गया था।

इधर सत्याग्रह-कमेटी के निश्चय के अनुसार नेता लोग दुकानें खुलवाने का उद्योग प्रारम्भ करवाने वाले थे। इस से पूर्व भी कई बार नेताओं ने बाजार खुलवाने का प्रयत्न किया था। परन्तु उस प्रयत्न में सफलता न हो सकी, जिसका मुख्य कारण यह था कि आम जनता महात्मा गांधी की गिरफ्तारी से बहुत विक्षुब्ध थी और तब तक हड़ताल जारी रखना चाहती थी जब तक महात्मा गांधी आजाद न हों। १५ अप्रैल को शहर में दिल्ली के चीफ कमिश्नर साहब की ओर से इश्तहार निकाले गये जिनमें यह सूचना दी गई थी, 'महात्मा गांधी इस समय आजाद हैं और अहमदाबाद में सर्वथा स्वस्थ हैं।' सत्याग्रह कमेटी के पास महात्माजी का जो संदेश आया था, उसमें उन्होंने यह इच्छा प्रकट की थी कि हड़ताल शीघ्र से शीघ्र हटा दी जाय। इस आधार पर नेताओं ने निश्चय किया था कि आज बाजार में स्वयं खड़े होकर दुकानें खुलवायेंगे। जब पुलिस के प्रदर्शन की खबर मिली तब यह सन्देह होने लगा कि शायद जनता में नया विक्षोभ पैदा हो जायगा और बाजार खोलने के कार्य में सफलता न हो, तो भी देशसेवकों ने अपना कर्तव्य पालन करना आवश्यक समझा और लगभग नौ बजे स्वामी श्रद्धानन्दजी तथा हकीम अजमलखां के नेतृत्व में राष्ट्रीय स्वयं-सेवक दुकानें खुलवाने के लिए फतेहपुरी जा पहुँचे।

कहीं-कहीं थोड़ी बहुत रुकावट हुई परन्तु सामान्य रूप से दुकानें खुलने लगीं। प्रतीत होता है कि इस प्रकार शांति से दुकानें खुलने का दृश्य अधिकारियों को नहीं रुचा। दस बजते-बजते शहर के कई इलाकों से पुलिस द्वारा भीड़ पर लाठी चार्ज के समाचार आने लगे। ग्यारह बजे के लगभग चांदनी चौक में पुलिस ने गोली चलादी। सब जगह सनसनी फैल गई। जनता में कुछ भगदड़ भी पड़ गई, परन्तु देशसेवकों ने अपना काम जारी रखा और दुकानें खुलवाते रहे। समय तो काफी लगा परन्तु सायंकाल तक शहर के मुख्य मुख्य बाजार खुल गये। पुलिस की लाठी और गोली शहर को इतना भयभीत न कर सकी कि वह नेताओं की सलाह का अपमान करे अथवा विरोधी के इशारे पर नाचे।

## (ग) मधुर-स्मृति

१८ अप्रैल के प्रातःकाल शहर में कोई असाधारण बात दिखाई नहीं देती थी। कारोबार सामान्य रूप से चलने लगा।

१६ मार्च से लेकर १७ अप्रैल तक के यह दिन दिल्ली के राजनैतिक इतिहास में स्मरणीय रहेंगे। निम्नलिखित विशेषताएं उन बीस दिनों को विशेष रूप से स्मरणीय बनाती हैं।

१. ३० मार्च के गोली-काण्ड ने हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन के उस गांधी-युग के माथे पर रक्त का पहला मंगल सूचक टीका लगाया।

२. उस सम्मिलित रक्त के टीके के प्रभाव से हिंदू और मुसलमान सब भेदों को भुलाकर भाई-भाई की तरह मिलकर भारत की स्वाधीनता का विजय घोष करने लगे। विरोधियों का यह कथन सर्वथा निर्मूल सिद्ध हो गया कि हिंदू-मुसलमान मिलकर देश की स्वतंत्रता के लिए यत्न नहीं कर सकते।

३. जैसे वसंत ऋतु में स्वयं ही वनस्पतियों में नई-नई कोंपलें और कलियां निकल आती हैं, न जाने उसी प्रकार कहां से उन दिनों शहर के गली कूचों में से देश के लिए स्वार्थ-त्याग करने वाले उत्साही राष्ट्र-प्रेमी कार्यकर्ता निकल आये। उनमें हिन्दू-मुसलमानों का कोई भेद नहीं था।

४. यह आश्चर्य की बात थी कि उन बीस दिनों में, शहर में साधारण अपराधों की संख्या बहुत ही कम, शायद शून्य के समान हो गई थी।

सम्भव है मेरा पहला राजनैतिक अनुभव था, इस कारण अथवा वह दिन ही इतने सुन्दर थे कि उनकी स्मृति मेरे मन के चित्रपट पर बहुत गहरे स्वर्णाक्षरों में लिखी गई है। लगभग २६ साल के घटनापूर्ण राजनैतिक जीवन में मुझे फिर कभी उतना निर्दोष और मधुर अनुभव नहीं हुआ। इसीलिए मैंने उन्हें "स्मरणीय बीस दिन" कहा है।

तीस मार्च को दिल्ली में जो घटनाएं हुईं, उनका सारे देश पर बहुत गहरा और व्यापक असर हुआ। एक बिजली सी दौड़ गई। महात्मा गांधी ने स्वामीजी को मद्रास से अहमदाबाद लौटकर निम्न-लिखित आशय का तार दिया—'मैं अभी मद्रास की यात्रा से आया हूं। कल मैंने दुर्घटना के कुछ समाचार पढ़े। साथ ही आपका पुरजोर बयान भी पढ़ा। मुझे उससे अभिमान हुआ। रौलट-बिलों के विरोध में जो आदर्श-धैर्य दिखाया गया है, उसके लिए आप और दिल्ली निवासियों को मैं बधाई देता हूँ।' तार के अन्त में महात्माजी ने दिल्ली-निवासियों को सलाह दी थी कि वे अगले सप्ताह अन्य देशवासियों के साथ मिलकर उपवास करें।

इस तार से उस गम्भीर प्रभाव का अनुमान लगाया जा सकता है, जो दिल्ली की घटनाओं का देश के कोने-कोने में हुआ होगा।

सैकड़ों स्थानों पर सार्वजनिक सभाएं करके दिल्ली के शहीदों की प्रशंसा और सरकार की निन्दा की गई और साथ ही यह संकल्प प्रकट किया गया कि देशवासी सत्याग्रह द्वारा रौलट-एक्टों का नाश करके रहेंगे। दिल्ली में और उसके आसपास अभूतपूर्व जागृति दिखाई देने लगी। प्रायः प्रतिदिन दिल्ली में कहीं न कहीं विराट सार्वजनिक सभाएं होती थीं। २ अप्रैल को श्रीमती सुभद्रादेवीजी के नेतृत्व में मारवाड़ी धर्मशाला में स्त्रियों की भी एक सभा हुई।

३० मार्च को दिल्ली में जो कुछ हुआ वह केवल बीज मात्र था। वह तो वास्तुतः देश में होने वाले जोरदार आन्दोलन और सरकार द्वारा किये जाने वाले भीषण रक्तपात की प्रस्तावना थी।

घटनाचक्र बड़ी तेजी से चलने लगा। ६ अप्रैल को देश भर में रौलट-बिलों के विरुद्ध प्रतिवाद के रूप में मातम का दिन मनाया जाने वाला था। दिल्ली में भी उसकी पूरी तैयारी हुई। उस दिन दिल्ली में जो दृश्य दिखाई दिया, उसका वर्णन करते हुए मैंने दैनिक विजय में जो शीर्षक दिया, वह उस दृश्य की गम्भीरता को सूचित करता है। शीर्षक था 'अजदहा जागा। दिल्ली में अपूर्व दृश्य।' पूरी हड़ताल रही। किसी 'जी-हजूर' दुकानदार की भी हिम्मत न हुई कि दुकान खोले। दिन भर नगर-वासी व्यस्त रहे। प्रातःकाल आठ बजे फतहपुरी मस्जिद में तीस मार्च के शहीदों के लिए दुआ की गई। इस सभा में हिन्दू और मुसलमान लगभग समान संख्या में जमा हुए। दिन के दस बजे एडवर्ड पार्क में जलसा हुआ। कड़ी धूप का समय था, तो भी १५—२० हजार आदमी इकट्ठे हो गये। उसमें भी रौलट बिलों की बुराइयों पर व्याख्यान हुए।

सांयकाल चार बजे मुख्य सभा होने वाली थी। इस सभा का स्थान स्वर्गीय डाक्टर अन्सारी की, दरियागंज वाली कोठी के मैदान में रखा गया था। वह पहला अवसर था कि डाक्टर अन्सारी की कोठी

के मैदान को सार्वजनिक सभा के उपयोग के लिये काम में लाया गया। यह श्रीगणेश था। इसके पश्चात जब तक डाक्टर अन्सारी जीवित रहे, तब तक वह और उनकी कोठी देशवासियों के लिये एक सार्वजनिक सम्पत्ति ही बनी रही। उस दिन की सभा स्मरणीय रहेगी। आज की भांति उन दिनों दरियागंज बस्ती भरी हुई नहीं थी। उसमें सड़क के किनारे-किनारे केवल कुछ कोठियें थीं, जिनमें उजाड़ बियाबान में पड़ी हुई डा० अन्सारी की कोठी अन्तिम थी। वहां पहुंचने के लिये मध्य शहर से कम से कम एक-डेढ़ मील का रास्ता तय करना पड़ता था। उस दिन की सभा में कम से कम दो लाख की उपस्थिति थी। अभी लाउडस्पीकरों का आरम्भ नहीं हुआ था। ऐसी दशा में इतने आदमियों को कैसे सम्हाला जाय? इस समस्या को यों हल किया गया कि सभा को तीन भागों में विभक्त कर दिया गया। मुख्य सभा के सभापति डाक्टर अन्सारी थे। अन्य वक्ताओं में मि० शुएब कुरेशी, स्वामी श्रद्धानन्दजी, मौलवी अहमदसईद आदि के व्याख्यान हुए। अन्य सभाओं में जिन वक्ताओं ने भाग लिया, उनमें मौलवी अब्दुल मजीद, ला० शंकरलाल, पं० रामचन्द्र देहलवी तथा प० लक्ष्मीनारायण आदि मुख्य थे। मुझे भी दो सभाओं में बोलना पड़ा। उन दिनों नये-नये वक्ता पैदा हो रहे थे। अन्य वक्ताओं में मौलाना आरिफहुसैन, श्री कीर्तिदेव शर्मा आदि के नाम भी मिलते हैं। इस सभा में यह भी घोषणा की गई कि महात्मा गांधी दिल्ली की घटनाओं के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिये शीघ्र ही दिल्ली आ रहे हैं।

६ अप्रैल का दिन देश भर में मनाया गया। जनता का उत्साह ज्यों-ज्यों बढ़ रहा था, सरकार का मिजाज त्यों-त्यों गर्म हो रहा था। ६ अप्रैल को कई जगह से गोली चलने के समाचार प्राप्त हुए। कलकत्ता, बम्बई आदि से जो समाचार आए, वे काफी चिन्ता-

जनक थे। परन्तु बाद में पंजाब से जो समाचार आने लगे वे भविष्य के अमङ्गल की सूचना देने वाले थे। ६ अप्रैल को अमृतसर में शान्तिपूर्ण हड़ताल के पश्चात विराट सभा हुई, जिसमें सत्याग्रह का अभिप्राय समझाते हुए रौलिट-बिलों के खिलाफ जोरदार शब्द उठाया गया। इधर सरकार ने डा० किचलू, डा० सत्यपाल, पं० दीनानाथ तथा स्वामी अनुभवानन्दजी को भारत रक्षा कानून के अनुसार आज्ञा दी कि वे न समाचारपत्रों में लेख लिखें और न सभाओं में बोलें। इन आज्ञाओं से केवल अमृतसर का ही नहीं प्रत्युत सारे पंजाब का वातावरण विक्षुब्ध होगया। एक अंग्रेज लेखक ने पंजाब को भारतवर्ष का 'बारूदघर' बतलाया था। पंजाब में समस्याएं पैदा होती हैं, जिन्हें भारतवर्ष सुलझाता रहता है। भारत-सरकार 'बारूदघर' के पास दियासलाई जलाकर देश भर के लिए एक विकट समस्या तैयार कर रही थी।

३० अप्रैल के शहीदों की यादगार कायम करने का प्रस्ताव इस पहले राष्ट्रीय सप्ताह में ही दिल्ली-निवासियों के सामने रखा जा चुका था। स्वामीजी की प्रेरणा पर इस यादगार के कोष की पूर्ति के लिए सेठ रग्घूमल लोहिया ने एक लाख रुपये की पहली राशि देने का संकल्प कलकत्ते से तार द्वारा प्रकट कर दिया था। शेष चार लाख की पूर्ति के लिए नेताओं की ओर से अपील प्रकाशित की गई थी।

अगले सप्ताह में वे घटनाएं घटीं, जिनसे भारत की राजनीति की दशा सर्वथा बदल गई। वह एक प्रकार से क्रान्तिकारी सप्ताह था। यह मैं बतला आया हूँ कि ३० मार्च को सरकार ने दिमाग खोकर जैसा हत्याकाण्ड किया, ६ अप्रैल को वैसा ही कई अन्य स्थानों पर दोहराया गया। देश के वातावरण को ऐसी रक्त-मिश्रित

घटनाओं ने और भी अधिक विक्षुब्ध कर दिया। इसी बीच में महात्मा गांधी उत्तरी भारत की घटनाओं का अध्ययन करने और लोगों को शान्ति का संदेश देने के लिये दिल्ली के लिये रवाना हो गये। महात्मा गांधी के नाम से सरकार ऐसी घबरा गई थी कि उनकी दिल्ली आने की सम्भावना ने अधिकारियों के होश गुम कर दिये। वे पागलपन का काम कर बैठे। जब रेलगाड़ी पलवल पहुँची तो पंजाब-सरकार की ओर से महात्मा गांधी को आज्ञा दिखाई गई कि वह पंजाब में न घुसें। मानो प्यासे को पानी मिले। महात्माजी तो पहले ही सत्याग्रह का अवसर तलाश कर रहे थे, उन्होंने आज्ञा मानने से इन्कार कर दिया। अगले स्टेशन पर जिस डिब्बे में महात्माजी बैठे थे, वह डाकगाड़ी के साथ से काटकर अलग कर दिया गया। महात्माजी का डब्बा पुलिस ने अपनी हिरासत में ले लिया। वापिस जाने वाली दूसरी गाड़ी से वह डब्बा महात्माजी के साथ बम्बई वापस भेज दिया गया।

इस समाचार ने पंजाब के 'बारूदघर' में आग लगा दी। जलियांवाला बाग और मार्शल-ला उस आग का ही परिणाम था। सरकार ने महात्माजी को बम्बई ले जाकर मुक्त कर दिया, परन्तु गिरफ्तारी से जो अशांति उत्पन्न हुई थी, वह आसानी से शांत न हुई।

दिल्ली पर इन सभी घटनाओं का असर पड़ता रहा। यह सौभाग्य की बात थी कि यहां की स्थिति प्रारम्भ से ही नेताओं के काबू में आगई थी। जैसा इससे पूर्व की घटनाओं से प्रकट हो चुका होगा कि २६ मार्च से ही राजधानी के सार्वजनिक जीवन को स्वामी जी ने सम्हाल लिया था। लगभग ३० साल के क्रियात्मक सार्वजनिक जीवन और सुदीर्घ तप का आश्चर्यजनक प्रभाव उस समय प्रकट हो रहा था। इलाहाबाद के एंग्लोइण्डियन पत्र पायोनियर ने दिल्ली की उन दिनों की घटनाओं पर सम्पादकीय टिप्पणी देते हुए स्वामीजी

के लिए Inevitable Swami Shraddhanand (अनिवार्य स्वामी श्रद्धानन्द) शब्द का प्रयोग किया था। वस्तुतः उन दिनों स्वामीजी दिल्ली के सार्वजनिक जीवन के लिये अनिवार्य हो गये थे। पछे से हकीम अजमलखां और डा० अन्सारी आदि महानुभावों के बीच में आ जाने से जनता को सम्हालने में और भी आसानी होगई। फलतः पजाब की रक्तभरी घटनाओं से दिल्ली प्रभावित तो हुई, परन्तु यहां विस्फोट नहीं हुआ। नगरवासियों ने दिमाग नहीं खोया।

घटनाचक्र का असर मुख्यरूप से हड़ताल पर पड़ता रहा। ३० मार्च की हड़ताल अभी पूरी तरह टूटने नहीं पाई थी कि ६ अप्रैल का दिन आ पहुँचा। उस दिन दिल्ली में जो हड़ताल हुई, उसने ३० मार्च को मात कर दिया। उस हड़ताल को रोकने का सत्याग्रह-कमेटी की ओर से प्रयत्न हो रहा था कि महात्माजी की गिरफ्तारी का समाचार आगया। खुलते हुये बाजार पर फिर ताला लग गया। १० ता० को पूरी हड़ताल रही। ११ ता० के प्रातःकाल जब सरकार के आदमी बाजार खुलवाने के लिये शहर में गए तो दुकानदारों ने उन्हें उत्तर दिया—'हमें महात्माजी के दर्शन करवा दो, बाजार खुल जायगा।'

इसके पश्चात सात दिन तक सरकार की ओर से बाजार खुलवाने के प्रयत्न निरन्तर होते रहे। प्रतिदिन अधिकारी बाजार में घूम घूम कर हड़ताल खोलने की प्रेरणा करते थे। डिप्टीकमिश्नर की ओर से कई इश्तहार शहर में चिपकाये और बांटे गये, जिनमें बाजार खोलने की प्रेरणा की गई थी। ऐसा न करने पर कठोर व्यवहार की धमकी भी साथ दी गई थी। इन सब साधनों से जब फल-सिद्धि न हुई, तो टाउन हाल में चीफ कमिश्नर साहब ने शहर के रईसों और व्यापारियों को इकट्ठा किया। उन लोगों ने भी अपनी

लाचारी प्रगट की, तो अन्त में बाधित होकर चीफ कमिश्नर ने व्यापारियों की सभा में स्वामी जी को तथा कुछ अन्य सत्याग्रही नेताओं को निमन्त्रित किया। सरकार की ओर से यह धमकी निरन्तर दी जा रही थी, यदि हड़ताल न खोली गई तो मार्शल ला जारी हो जायगा। इसी तरह बातचीत होते होते सात दिन बीत गये। अन्त में १८ अप्रैल को स्थानीय सत्याग्रह कमेटी ने निश्चित किया कि हड़ताल खुलवाई जाय, क्योंकि बाजार बन्द रहने से जनता का कष्ट बहुत बढ़ रहा था। सत्याग्रह कमेटी यह भी नहीं चाहती थी कि सरकार को आतङ्क और अत्याचार की दिशा में पग बढ़ाने का बहाना दिया जाय। उस स्वर्गीय युग के अन्तिम दिनों की घटनायें मैं पहले सुना चुका हूँ। पाठक इस इतिहास के सुनहले पृष्ठ को पढ़ें और देखें कि भारत की स्वाधीनता का सूत्रपात कहां से हुआ था।

समाप्त